# शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिये आवश्यक बातें
अगुवों की मार्गदर्शिका

# उद्धार को समझना

## अध्याय 1: मैं अपने उद्धार के बारे में कैसे सुनिश्चित हो सकता हूँ?

### परिचय

यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व पाठ्यक्रम का एक भाग है, जिसका शीर्षक उद्धार को समझना है। विभिन्न अध्यायों की यह श्रृंखला उद्धार से सम्बन्धित विचारों और मसीही बनने वाले लोगों के जीवन में होने वाली घटनाओं का मूल्यांकन करती है। दूसरे लोगों को प्रभावशाली ढंग से सुसमाचार सुनाने के लिये प्रत्येक विश्वासी को इन शिक्षाओं को जानना व समझना बेहद आवश्यक है। प्रत्येक अध्याय बाइबल में पाए जाने वाले एक विषय पर दृष्टिकोण व विचारों का मूल्यांकन करता तथा इन सिद्धान्तों और उन्हें आपके जीवन में उपयोग करने के विभिन्न पहलूओं पर चर्चा करता है। ये पाठ्यक्रम नये विश्वासियों को शिष्य बनाने तथा उन्हें इन विचारों को समझाने के लिये अति उत्तम हैं।

### अपेक्षित श्रोतागण्

इस पाठ्यक्रम के लिये अपेक्षित श्रोतागण नये विश्वासी या उद्धार से सम्बन्धित बुनियादी मसीही सिद्धान्तों पर पुनः विचार करने के इच्छुक मसीही लोग हैं। जो लोग सुसमाचार प्रचार करने या लोगों को शिष्य बनाने की तैयारी कर रहे हैं; वे इस पुस्तक की विषय–वस्तु से लाभान्वित हो सकते हैं। यह पाठ्यक्रम अपेक्षा करता है कि पाठकों ने यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने का निर्णय ले लिया है और वे मसीहीयत के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।

अगुवों की मार्गदर्शिका, अगुवों की ऐसे अध्यायों को तैयार करने में सहायता करने के लिए बनायी गयी है, जिसे www.dehindi.org पर प्राप्त शिष्यता के अनिवार्य तत्व नामक सामग्री के साथ इस्तेमाल किया जा सके।

---

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी औफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

# उद्धार को समझना

## अध्याय 1 : मैं अपने उद्धार के बारे में कैसे सुनिश्चित हो सकता हूँ?

**उद्देश्य**

इस अध्याय का उद्देश्य अपने उद्धार के निश्चय को समझना है। यह निश्चय प्रत्येक विश्वासी तथा उस व्यक्ति के लिये उपलब्ध है, जिसे वे सुसमाचार सुनाते व चेला बनाते हैं।

**अगुवे की टिप्पणी**

कोई भी मसीही जवान अपने जीवन में यह सोचकर सबसे बड़ी गलती कर सकता है कि उसका उद्धार मनोभावों या भले कार्यों पर आधारित है। मसीह में आने के बाद जब वे अपने प्रारम्भिक निश्चय को खो देते हैं, तो उन्हें शंका होने लगती है कि वास्तव में उनका परिवर्तन सत्य भी है या नहीं। हो सकता है कि विश्वासियों के साथ आपने इन बातों को होते हुए देखा हो। क्षणमात्र टिकने वाले मनोभावों पर विश्वास करने की बजाए किसी मज़बूत चीज़ पर विश्वास करने हेतु आप जवानों की सहायता किस प्रकार कर सकते हैं? हमें उनकी अगुवाई परमेश्वर की ओर से करनी चाहिये। एक अगुवा होने के नाते आपके लिये आवश्यक है कि इन अध्यायों में आप से कोई भी वचन न छूट जाए। प्रतिभागी ये देख पाएँ कि यह आपका विचार नहीं, लेकिन परमेश्वर का वह वचन है, जो उनके उद्धार को सुनिश्चित करता है। यह अध्याय आशा प्रदान करता है। अपने प्रतिभागियों में से अनिश्चितता व भय को दूर करने का प्रयास करें।

## परिचय

*समूह से पूछने हेतु निम्नलिखित में से दो या तीन प्रश्नों का चुनाव करें।*

- क्या कभी आपके मन में सन्देह उत्पन्न हुआ कि आप उद्धार पाए हैं या नहीं? तब आपने क्या किया?
- उद्धार प्राप्त करने वाले व्यक्ति के प्रगट चिन्ह क्या होते हैं? वे नियमित रूप में किस प्रकार के कार्य करते हैं? क्या कोई व्यक्ति उद्धार पाए, या सच में विश्वास किये बिना भी इस प्रकार के कार्यों को कर सकता है? क्या भिन्नता होती हैं ?
- हम अपने विश्वास को सुरक्षित करने तथा परमेश्वर के वचनों में पायी जाने वाली सच्चाई को स्मरण करने के लिये क्या कर सकते हैं?
- शैतान हमारे मन में उद्धार के प्रति सन्देह क्यों उत्पन्न करना चाहता है? ये सन्देह किस प्रकार शैतान के शक्तिशाली हथियार बन जाते हैं?
- आपके जीवन की विश्वास यात्रा में क्या कोई विशेष भावनात्मक घटना घटी? उस घटना से आपके विश्वास पर क्या प्रभाव पड़ा?

# अध्ययन

*समूह को निम्नलिखित बातों के निर्देश दें :*

## शिक्षाएँ

- **उद्धार का निश्चय :** हर एक के विश्वास में सन्देह का समय कभी न कभी आता ही है, ऐसे समय में उन्हें परमेश्वर से उत्तर प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति से बातचीत कर रहे हैं, जो अपने जीवन में सन्देह या शंकाओं का अनुभव कर रहा हो, या जो नया मसीही हो, तो याद रखें कि उसे अपने उद्धार के प्रति सुनिश्चित होना बहुत ही आवश्यक है। यह आवश्यक प्रश्न है, हमें इस प्रश्न को कभी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिये।

  - उद्धार का निश्चय दो स्थानों से आता है।

    - **परमेश्वर का वचन** यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों से उद्धार की प्रतिज्ञा करता है।
    - **हमारा परिवर्तित जीवन** परमेश्वर के कामों व हम में पवित्र आत्मा की उपस्थिति का प्रमाण है।

  - हमारा उद्धार निम्न बातों पर आधारित नहीं है...

    - हमारा उद्धार कामों पर आधारित नहीं है। कलीसिया जाना, परमेश्वर का वचन पढ़ना, तथा दया के काम हमें उद्धार नहीं देते। आप अपने कामों को अपने उद्धार का प्रमाण नहीं मान सकते।
    - हमारा उद्धार मनोभावों पर आधारित नहीं है। हमारी भावनाएँ आती–जाती रहती हैं। अच्छा महसूस करने वाला व्यक्ति भीतरी बीमारी के कारण मृत्यु के कग़ार पर खड़ा हो सकता है। हो सकता है कि हम क्षमा प्राप्त महसूस कर रहे हों, मगर हमारी भावनाएं हमें धोखा दे सकती हैं।

- **बाइबल से निश्चय :** परमेश्वर का वचन, वह सर्वप्रथम स्थान जहां हम उद्धार का निश्चय प्राप्त करने हेतु खोज कर सकते हैं। यह मानना आवश्यक है कि बाइबल सत्य और परमेश्वर का जीवित वचन है।

  - **हम बाइबल पर भरोसा क्यों कर सकते हैं :** बाइबल संसार की सारी पुस्तकों से भिन्न है। इसे परमेश्वर की प्रेरणा पाकर लिखा गया, तथा यह उद्धार और मसीही जीवन का आधार है। इसे 40 अलग–अलग लोगों ने 1500 वर्षों के अंतराल में लिखा – फिर भी यह एक दूसरे के सम्पूरक व पूर्ण हैं। निम्नलिखित वचन हमें इस पुस्तक के मूल व महत्व के बारे में बताते हैं।

    - **परमेश्वर ने लोगों के द्वारा बात की** (2 पतरस 1:20–21)
    - **उचित जीवन व्यतीत करने हेतु परमेश्वर का स्तर** (2 तीमुथियुस 3:16–17)
    - **सत्य, परमेश्वर का वचन** (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)
    - **उद्धार का निर्देश** (यूहन्ना 20:31)
    - **जीवन का मार्गदर्शन** (भजन संहिता 119:105)

  - **बाइबल उद्धार के बारे में क्या कहती है :** परमेश्वर का वचन हमें उद्धार के मार्ग के बारे में और इसे प्राप्त करने के बारे में बताता है। बाइबल हमारी पापमय अवस्था और हमें बचाने के लिये परमेश्वर द्वारा किये गए कार्यों के बारे में बताती है।

    - **हम परमेश्वर की दृष्टि में बहुमूल्य सृष्टि हैं** (कुलुस्सियों 1:16)
    - **पाप के कारण सृष्टि का सम्बन्ध परमेश्वर से टूट गया, और हम में से प्रत्येक जन पाप में पैदा होता है** (रोमियों 5:12 व रोमियों 3:23)
    - **पाप सर्वदा एक मज़दूरी व परिणाम को प्रदान करता है, अर्थात मृत्यु और परमेश्वर से अलगाव है** (रोमियों 6:23)

- **परमेश्वर ने यीशु को हमारे पापों का मूल्य चुकाने तथा परमेश्वर से हमारा मेल–मिलाप कराने के लिये भेजा** (यूहन्ना 3:16)
- **परमेश्वर ने हम से प्रतिज्ञा की है कि यदि हम अपने पापों का अंगीकार करें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करेंगे, और यद्यपि हम शारीरिक रीति से मर भी जाएं... तौभी हमें अनन्त जीवन दिया जाएगा** (1 यूहन्ना 1:9; प्रेरितों के काम 2:38–39; यूहन्ना 3:36)

➢ **बाइबल के अनुसार एक व्यक्ति कब उद्धार पा लेता है?** बाइबल के बहुत से वचन बताते हैं कि एक व्यक्ति कब और कैसे उद्धार पाता है। नये विश्वासियों के लिये इन वाक्यों को समझना निश्चय ही जटिल हो, मगर इनका अर्थ बहुत ही स्पष्ट है। प्रारम्भिक मसीही भी इन बातों को समझने में दिक्कत महसूस करते थे, इसी कारण प्रेरित यूहन्ना ने उन्हें समझाने के लिये बहुत सी पत्रियों को लिखा। उन में से एक पुस्तक आप की बाइबल में – 1 यूहन्ना है। 1 यूहन्ना 5:13; 1 यूहन्ना 5:1–5 पढ़ें। वचन के अनुसार यदि कोई व्यक्ति निम्नलिखित बातों को पूरा करता है, तो वह उद्धार पा चुका है :

- **वे मान लेते हैं कि उन्होंने पाप किया है** (प्रेरितों के काम 2:38; लूका 24:46–48; 2 कुरिन्थियों 7:10)
- **वे विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है** (यूहन्ना 20:31; यूहन्ना 3:36; यूहन्ना 5:24)
- **वे अंगीकार करते हैं कि यीशु ही प्रभु है** (रोमियों 10:9–10; 1 कुरिन्थियों 12:3)
- **वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं** (1 यूहन्ना 5:3; 1 यूहन्ना 5:18; यूहन्ना 14:15)
- **वे परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते हैं** (1 यूहन्ना 5:1–2; 1 यूहन्ना 1:17; 1 यूहन्ना 4:7; यूहन्ना 13:34–35)
- **उन्हें पवित्र आत्मा मिला होता है** (प्रेरितों के काम 2:38; इफिसियों 1:13; तीतुस 3:4–6; रोमियों 8:16)

➢ उपरोक्त बिन्दू ध्यान देने व सावधानीपूर्वक मनन् करने योग्य हैं। उस वचन पर विशेष ध्यान दें, जहां लिखा है कि पवित्र आत्मा के बिना कोई व्यक्ति नहीं कह सकता कि यीशु ही प्रभु है। अपने हृदय की गहराई से उसे अपने जीवन का प्रभु मानना, और उसकी आज्ञाओं के अनुसार सारे कार्यों को करने की इच्छा रखना, परमेश्वर से दूर रह कर या उसके बिना करना असम्भव है। यह सम्भव है कि हम वचनों को अपनी जुबान से बोलते हों लेकिन उसका पालन अपने जीवन में न करते हों। इसी प्रकार, परमेश्वर की सारी आज्ञाओं का पालन करने की इच्छा, दूसरों को मन की गहराई से प्रेम करना, पहले दूसरों के बारे में सोचना, ये सब पवित्र आत्मा द्वारा हमारे जीवन में काम करने के लक्षण हैं।

➢ **अपने आप से पूछें** – क्या मैंने इन कामों को किया है? क्या मैं इन कदमों से होकर गुज़रा हूँ? क्या मेरे मन की इच्छा यही है?

❖ **परिवर्तित जीवन से निश्चयः** परमेश्वर का वचन उद्धार पाए हुए और उद्धार न पाए हुए व्यक्ति में भेद प्रगट करने के लिये काफी कठोर शब्दों का उपयोग करता है। उद्धार पाने वाला व्यक्ति – पहले आत्मिक रूप से मृतक था – लेकिन अब उसे जीवन प्राप्त हो गया है (पढ़ें – इफिसियों 2:1–10)। मृतक और जीवित व्यक्तियों के बीच अनेकों भिन्नताएँ हैं – अतः आत्मिक तौर पर जीवित व्यक्तियों को उद्धार मिल गया है। जब हम उद्धार प्राप्त करते हैं, तो हम आत्मिक तौर पर जीवित हो जाते हैं। हमारे जीवन की परिस्थितियाँ भले ही परिवर्तित न हों, मगर हृदय और मन बिल्कुल नया हो जाता है। इसके कारण हम परिस्थितियों में बिल्कुल अलग ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगते हैं। हम बिल्कुल परिवर्तित व्यक्ति बन जाते हैं। प्रारम्भ में यह परिवर्तन छोटा हो सकता है, लेकिन समय के साथ–साथ यह विकसित होता जाता है।

## लक्ष्य

❖ प्रतिभागियों को छोटे–छोटे समूह बनाने के लिये कहें। प्रतिभागियों से उन बदलावों की सूची बनाने के लिये कहें, जो किसी व्यक्ति में उद्धार पाने के बाद प्रगट होते हैं। पिछले खण्ड में चर्चा की गई बातों को प्रत्यक्ष रूप में होने के लिये किसी व्यक्ति के जीवन में काम का होना आवश्यक है।

## सिखाएँ

❖ **हम अपने परिवर्तित जीवन पर भरोसा कर सकते हैं :** लोग अपने असली स्वभाव के विरूद्ध अभिनय करने में माहिर होते हैं; ऐसा कर के वे कुछ समय के लिये खुद को व अपने नज़दीकी लोगों को मूर्ख बनाते हैं। लेकिन यीशु मसीह में विश्वास करने के पश्चात् प्राप्त सच्चा परिवर्तन देखने लायक चमत्कार होता है। यह चमत्कार प्रत्येक विश्वासी के जीवन में भी होता है और यह आपके उद्धार का प्रमाण भी हो सकता है। ध्यान दें कि किसी व्यक्ति के उद्धार पाते समय क्या होता है।

➢ **हम मरे हुए होते हैं, परन्तु हमें जीवन प्राप्त हो जाता है:** यीशु मसीह को स्वीकार करने से पहले और बाद के फरक को प्राप्त "जीवन" के तौर पर परिभाषित किया जाता है। इसका अर्थ है कि हमारे जीवन के मृतक भाग अकस्मात जीवन को प्राप्त कर लेते हैं। उदाहरण के लिये: पाप के प्रति संवेदनशीलता, सचेत विवेक, दूसरों की सेवा और उनको प्रेम करने की इच्छा बढ़ने लगती है। विश्वास में छोटे बच्चे होने के समय यह इच्छा छोटी होती है – लेकिन यह इच्छा निरन्तर बढ़ती रहेगी!

- 1 यूहन्ना 5:12
- इफिसियों 4:22–24
- यूहन्ना 5:24
- रोमियों 6:4
- इफिसियों 2:5
- यूहन्ना 3:36

➢ **हमें नया हृदय और नया मन प्राप्त होता है :** उद्धार प्राप्त करने से पहले हमें परमेश्वर की बातें समझ नहीं आती थीं, या परमेश्वर के मन की इच्छाएं हमारी इच्छाएं नहीं थीं। क्या आपने अपने जीवन में कभी ऐसा अनुभव किया है? परमेश्वर हम से नये हृदय और नये मन की प्रतिज्ञा करते हैं। परमेश्वर के वचनों को समझने की योग्यता और उचित बातों को करने की इच्छा, हमारे जीवन में परमेश्वर के काम करने का परिणाम है।

- 2 कुरिन्थियों 5:17
- 2 कुरिन्थियों 4:4
- कुलुस्सियों 3:9–10
- यहेजकेल 36:26
- रोमियों 12:2

➢ **हमें पवित्र आत्मा दिया जाता है :** परमेश्वर का एक और चमत्कारी वरदान यह है कि वह – पवित्र आत्मा के रूप में – हमारे भीतर वास करने के लिये आता है। वह हमें अधिक से अधिक मार्गदर्शन व सामर्थ्य प्रदान करता है। हम बाइबल में पढ़ते हैं कि जब यीशु मसीह अपने प्रस्थान के लिये चेलों को तैयार कर रहे थे, तो वे चेले डरे हुए थे। आज के बहुत से लोगों के समान वे भी उलझन में, अकेले व असुरक्षित महसूस करते थे। लेकिन यीशु ने एक ऐसा सहायक भेजने की प्रतिज्ञा की, जो सदैव हमारे साथ बना रहेगा, अर्थात् – पवित्र आत्मा। जैसे–जैसे हम यीशु मसीह की समानता में बदलते चले जाते हैं, परमेश्वर की आत्मा के प्रमाणों को अपने जीवन में प्रगट होता हुआ पाएँगे। हमारे जीवन में "आत्मा का फल" लगातार बढ़ने लगेगा – जो आनन्दित, धीरजवंत, प्रेमी होने की योग्यता है। पवित्र आत्मा एक वरदान है, जो हमें उद्धार व आने वाले अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा के रूप में दिया गया है।

- यूहन्ना 14:26
- रोमियों 8:16
- रोमियों 8:26
- गलातियों 5:22–23
- प्रेरितों के काम 2:38
- यूहन्ना 14:15–17

➢ **क्या यह बातें आपको दर्शाती है?** यदि कोई व्यक्ति उद्धार को लेकर दुविधा में है, तो हम उससे इन प्रश्नों को कर सकते हैं: उपरोक्त वचनों में पाए जाने वाले बदलाव क्या आप के जीवन में प्रगट हुए? वचनों के

अनुसार जिन कामों को करना अनिवार्य है, क्या आपने उनको किया (अर्थात् पश्चाताप, अंगीकार, और विश्वास)? क्या आपने नया जन्म, नया हृदय व नया मन, और पवित्र आत्मा पाया?

- यदि वे अपने जीवन में इन प्रमाणों को या लक्षणों को नहीं देख पाते हैं, लेकिन आपने उनके जीवन में इन प्रमाणों को देखा है, तो आप उनको इन प्रमाणों को देखने में सहायता करें।
- यदि वे इन प्रमाणों को नहीं देख पाते हैं, तो इसका अर्थ है कि उन्हें उद्धार पाने की आवश्यकता है। आपके पास उन्हें दोबारा उद्धार के बारे में समझाने का अवसर है।

❖ **परमेश्वर के प्रेम में बने रहें :** उद्धार का निश्चय खोजने वालों के लिये इस अध्याय में पाए जाने वाले पद सहायक होने चाहिये। परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने पर हम जीवित हो जाते हैं। हम उसकी सन्तान बन जाते हैं। हम अपने वर्तमान जीवन तथा अनन्तता में अपने प्राणों की सुरक्षा के लिये परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं। हमें अपने आप को अपने उद्धार की समय–समय पर याद दिलाने तथा परमेश्वर के नज़दीक बने रहने के लिये उसकी खोज करने की आवश्यकता पड़ती है।उद्धार खोजने वालों के लिये कुछ और बातें निम्न हैं:

- अपने उद्धार को सुरक्षित रखने के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखें (यूहन्ना 10:28)
- परमेश्वर के समीप बने रहें, उसकी आज्ञाओं का पालन करें (1 यूहन्ना 3:24)
- परमेश्वर के प्रेम में बने रह कर दूसरों पर दया करें, सुसमाचार प्रचार करें और किसी भी ठोकर से बचने के लिये परमेश्वर पर भरोसा रखें (यहूदा 1:20–24)

# चर्चा करने वाले प्रश्न

❖ जिन लोगों को अपने विश्वास पर सन्देह हो, आप उनको क्या सलाह देंगे? आप उन्हें अपने विश्वास को मज़बूत करने के लिये क्या सलाह देंगे?

❖ आप उन लोगों को क्या उत्तर देंगे, जिनका मानना है कि उद्धार या अनन्त जीवन पाने के लिये हमें कुछ रीति–रिवाजों, सामाजिक या भले कार्यों को करना आवश्यक है?

❖ आप अपने उद्धार के बारे में अभी कैसा महसूस करते हैं? परमेश्वर ने अपने वचन व पवित्र आत्मा के द्वारा किस प्रकार आपको निश्चय प्रदान किया?

❖ आपके पापों से उद्धार व मसीह में नया जन्म प्राप्त करने से आपके जीवन में क्या परिवर्तन हुआ?

# प्रार्थना

*प्रार्थना के साथ समाप्त करें। परमेश्वर का धन्यवाद दें कि उसने हमें उद्धार की आशीष दी, और उद्धार का निश्चय परमेश्वर के वचनों तथा परमेश्वर द्वारा प्रदान किये गए परिवर्तित जीवन से प्राप्त होता है। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करे तथा उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह व प्रतिज्ञा स्मरण कराएँ कि कोई भी उन्हें परमेश्वर के हाथों से नहीं छीन सकता।*